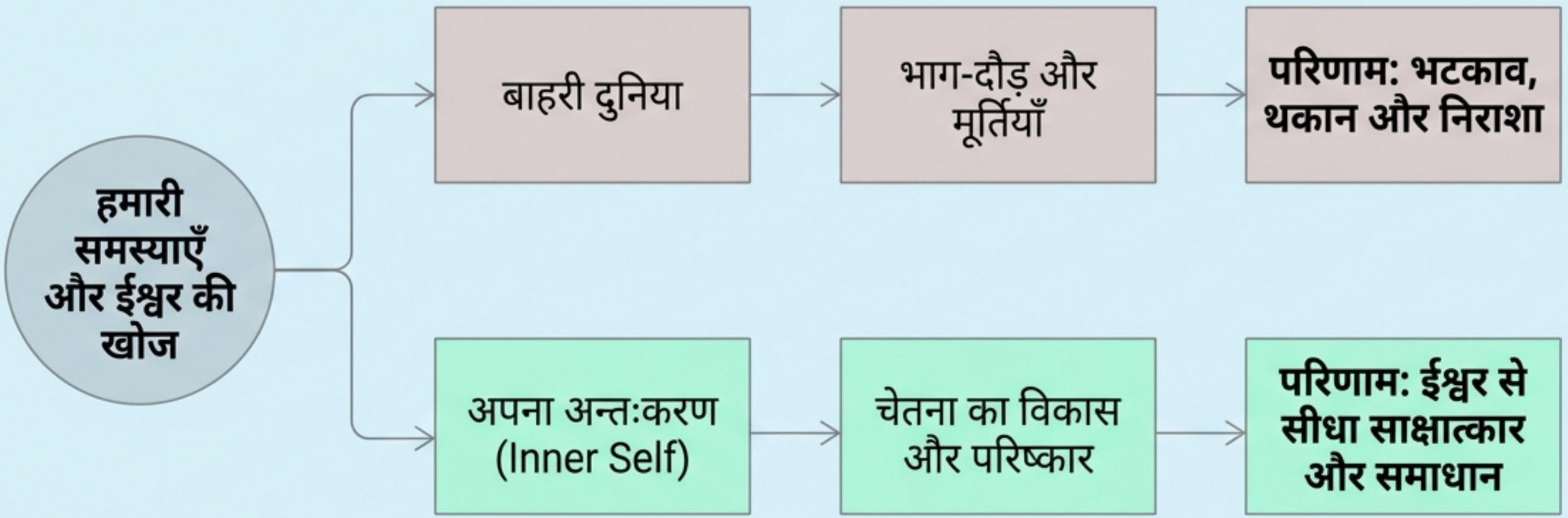
# उसे जड़ में नहीं, चेतन में खोजें

## मनोविज्ञान और अध्यात्म के संगम से अपने भीतर की असीमित शक्तियों को पहचानने का वैज्ञानिक राजमार्ग

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — 'मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।' — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

# ईश्वर और समाधान की खोज दिशा




वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना। आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि से कहियेगा कि मेरे ज्ञा जो मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

# जड़ और चेतन का बुनियादी अंतर



## **जड़** (The Inert)

- केवल बाहरी अनुस्मारक (Reminder) या मन बहलाने का माध्यम।
- यह हमारी चेतना से संवाद नहीं कर सकता।



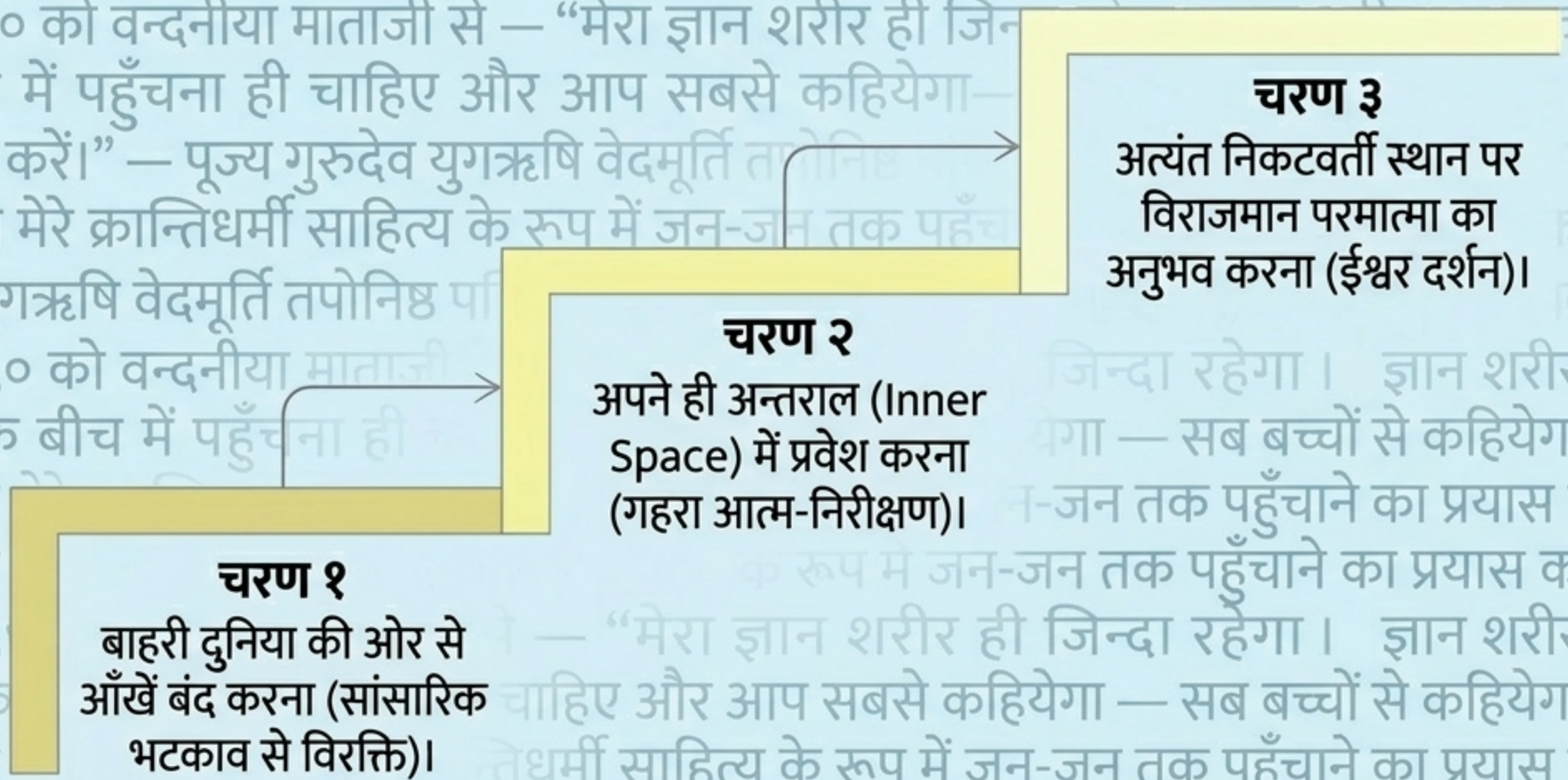
## **चेतन** (The Conscious)

- ईश्वर चेतन है।
- चेतना के साथ चेतना दूध और पानी की तरह घुल-मिल सकती है।
- यहीं से असीमित शक्तियों का संचार होता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना। आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि से कहियेगा कि मेरे ज्ञा जो मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

# ईश्वर के निकट पहुँचने का त्रि-चरणीय राजमार्ग




***सरलता को कठिन बनाकर रख लेना, केवल मनुष्य की अपनी अज्ञानता पर निर्भर है।***

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना। आप सबसे कहिएगा — सब बच्चों से कहिएगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

# सूफी संत का विशाल दर्पण

**भक्त का आग्रह:** एक भव्य मंदिर के निर्माण की इच्छा।

**सूफी संत का रहस्य:** प्रतिमा के स्थान पर दर्पण की स्थापना का निर्देश।

**परम उद्देश्य:** दर्शक इसमें अपनी छवि देखकर समझें कि ईश्वर इसी काया के भीतर विद्यमान है, उसे बाहर खोजना व्यर्थ है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

# आत्म-परिष्कार का चक्रीय विज्ञान

**आत्मसत्ता** (Inner Self) को पहचानना।

**विचारों** और **भावनाओं** का परिष्कार (Refinement) करना।

पात्रता के अनुरूप दिव्य वरदानों की अनवरत वर्षा।




**परमात्म सत्ता** (Supreme Soul) के स्तर तक विकसित होना।

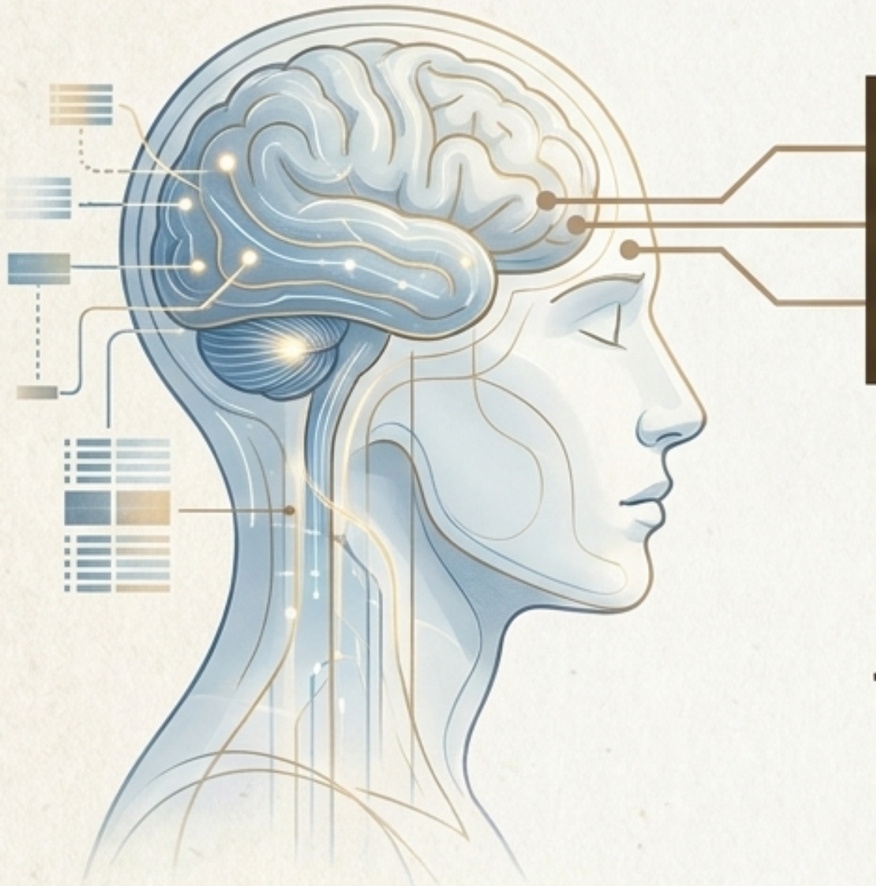
**पात्रता के अनुरूप दिव्य वरदानों** के स्तर तक विकसित होना।

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जका प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# मनःशास्त्र का अकाट्य सिद्धांत



**मनःस्थिति (Mental State)** → **जन्म देती है** → **परिस्थिति (Circumstances) को।**

**मनुष्य जैसा सोचता है** › **वैसा ही कर्म करता है** › **और अंततः वैसा ही बन जाता है।**

NotebookLM

# कर्म और नियति का इनपुट-आउटपुट मॉडल

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)




NotebookLM

# भटकाव बनाम सुनिश्चित मार्ग

## भटकाव
(व्यर्थ प्रयास)

- परिस्थितियों की अनुकूलता की प्रतीक्षा।
- बाहरी सहायता प्राप्त करने की फिराक में घूमना।




## सुनिश्चित मार्ग
(मूल्यवान)

- भावना, मान्यता और आकांक्षा का परिष्कार।
- अपनी विचारणा और गतिविधियों को स्वयं सुधारना।

NotebookLM

# बोने और काटने का सुनिश्चित तथ्य



**बीज:**
नया साहस जुटाना

**अंकुरण:**
नया कायक्रम बनाना

**पौधा:**
निरंतर प्रयत्नरत होना

**फल:**
अपने बोये हुए को काटना

**बिना भटकाव का यही एकमात्र वैज्ञानिक मार्ग है।**

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।" — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

# विपत्ति का मूल कारण और अध्यात्मवेत्ताओं का समाधान

**समस्या: असंख्य विपत्तियों में फँसना**

↓ क्यों? (कारण)

मनुष्य द्वारा अपने स्वरूप, सत्ता, महत्ता और लक्ष्य को भूल जाना।

↓ कैसे? (समाधान)

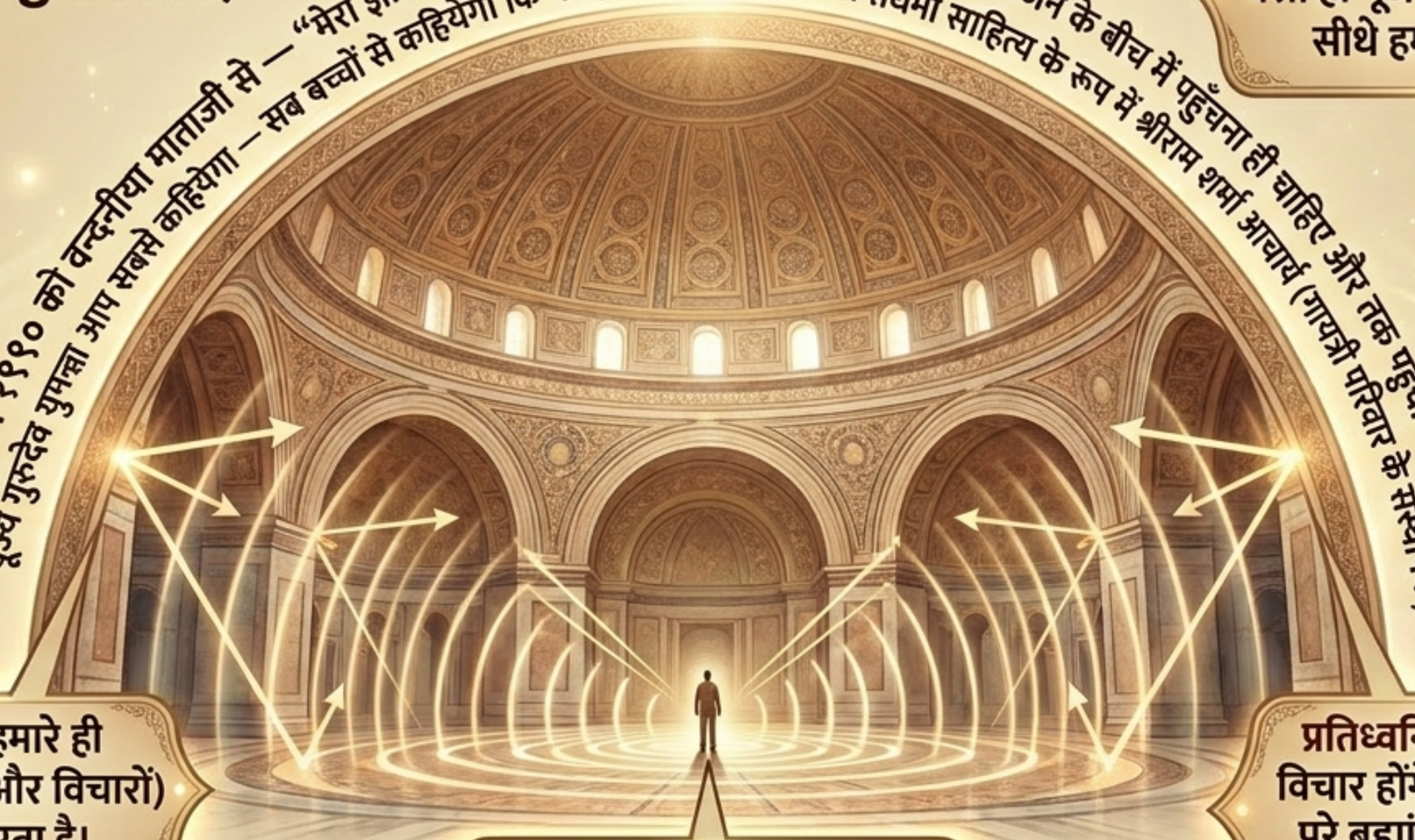
यदि हम स्वयं को सुधार लें, तो हमारा अपना ही सुधरा हुआ प्रतिबिम्ब अन्य व्यक्तियों और परिस्थितियों में झलकता हुआ दिखाई पड़ेगा।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ““मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

# गूंजते गुंबद का सिद्धांत
## (The Echoing Dome)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और तक पहुँचाने का प्रयास हो।"
" पूज्य गुरुदेव युगऋषि आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



3 प्रतिध्वनि: जैसे हमारे विचार होंगे, वैसी ही गूंज पूरे ब्रह्मांड से लौटकर सीधे हमारे पास आएगी।

2 टकराव: यह हमारे ही 'उच्चारण' (कर्मों और विचारों) को ग्रहण करता है।

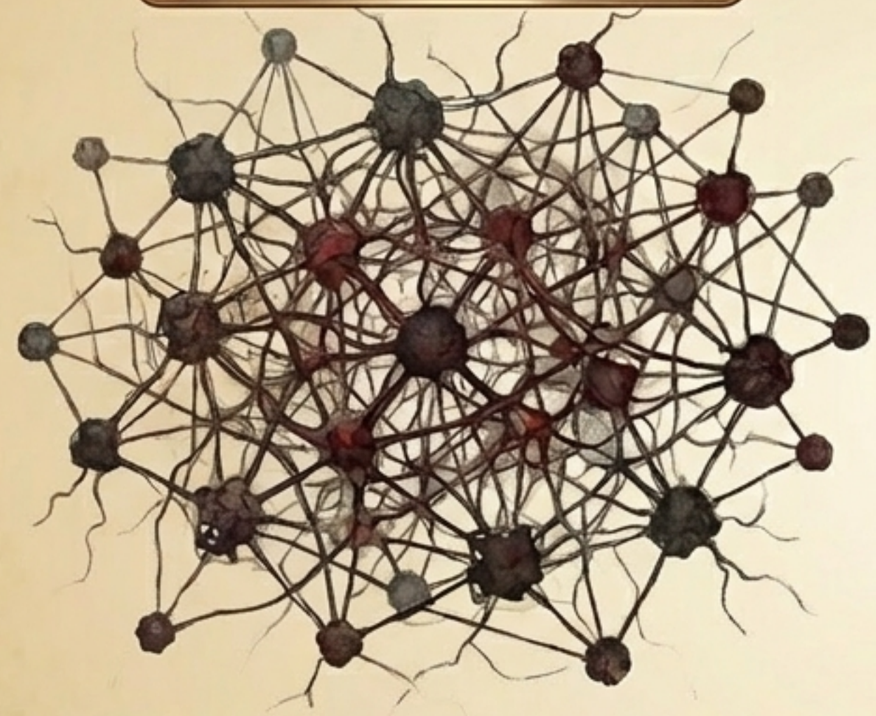
प्रतिध्वनि: जैसे हमारे विचार होंगे, वैसी ही गूंज पूरे ब्रह्मांड से लौटकर सीधे हमारे पास आएगी।

1 उत्सर्जन: यह संसार एक विशाल गुंबद की तरह है।

NotebookLM

# आकर्षण का नियम: हम किसे खींचते हैं?

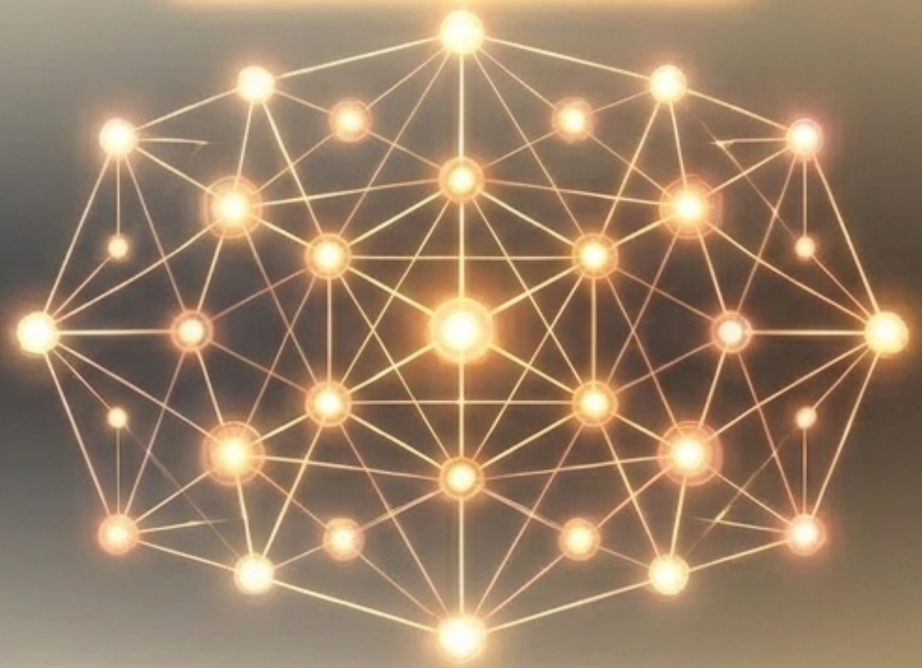
## दुष्ट-दुर्जनों का नेटवर्क



भली-बुरी अभिरुचि के लोग इर्द-गिर्द उसी स्तर की मंडली बनाते हैं, जो पतन और उत्तेजना में सहायक बनती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही चिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रियाएँ साहियेगा — मत बच्चे कहियेगा कि — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा तक पहुंचा शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## सज्जनों का नेटवर्क



शालीनता सम्पन्नों को उच्चस्तरीय प्रतिभाओं के साथ जुड़ने और महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त करने का स्वाभाविक लाभ मिलता है।

NotebookLM

# संपूर्ण परिवर्तन का अंतिम समीकरण




**सरलता को कठिन बनाकर रख लेना, मनुष्य की अपनी चेष्टा पर निर्भर है।**




NotebookLM

# अंतिम आह्वान: अंतर्मुखी यात्रा आज ही आरंभ करें



१. अपनी भावना, आकांक्षा और विचारों को परिष्कृत करने का संकल्प लें।

२. ईश्वर दर्शन के लिए बाहरी भाग-दौड़ और भटकाव को आज ही रोकें।

३. अपने भीतर विराजमान भगवान (चेतन) को उभारने का प्रयत्न शुरू करें।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेग — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM